शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण क्षेत्रों पर औद्योगीकरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. सत्यवीर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
चौ. जी.एस.गर्ल्स डिग्री कॉलेज
सहारनपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

औद्योगीकरण के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में तीव्र गति से परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। गाँव के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परिवर्तन की यह गति सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दिशाओं में हो रही है। औद्योगीकरण से एक ओर गांव में आर्थिक समृद्धि बढ़ी है तो दूसरी ओर गाँव से पलायन भी बहुत बढ़गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण क्षेत्रों पर औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

ग्रामीण समुदाय में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं। ग्रामीण समुदाय की प्रविधि, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संस्थाएँ, कला, धर्म, साहित्य, विचारधारा आदि सभी परिवर्तन के क्रम से गुजर रहे है। देश की स्वतन्त्रता के बाद ग्रामीण समुदाय में यह क्रम तीव्र हो गया है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैज्ञानिक प्रवृति का प्रसार, शिक्षा संचार के संसाधनों का विकास आदि परिस्थितियों के कारण ग्रामीण सामुदायिक जीवन में अनके परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनों की विस्तृत चर्चा डॉ. ए.आर. देसाई, डॉ. डी.एन. मजूंमदार, डॉ. डी.आर. गाडगिल, एस. थीरूमसाई आदि ने अपनी-अपनी कृतियों में की है। उद्योग तथा श्रम के बीच दोहरा सम्बन्ध है। ये दोनों ही मिलकर समुदाय के समस्त समूहों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। साथ ही औद्योगिक उत्पादन करने वाले संगठन भी दैनिक व्यवहारों में स्थानीय समूहों की मनोवृत्तियाँ एवं क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। सामुदायिक संस्थाएँ बिना किसी आर्थिक आधार के कार्य कर सकती हैं। वहीं व्यवसायिक क्रियाएँ समुदाय से एक निश्चित सहयोग प्राप्त किये बिना पूरी नहीं हो सकती हैं। उद्योग-धन्धे भी अनेक प्रकार से समाज को प्रभावित करते हैं। इसी के परिणामस्वरूप समूह, समुदाय, संस्कृति तथा मानव व्यवहार से सभी पक्ष प्रभावित होते है।

भारत में औद्योगीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन

औद्योगीकरण वास्तव में आर्थिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आता है। लेकिन अर्थव्यवस्था के बदलने के साथ-साथ औद्योगीकरण समाज की अन्य व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन लाता है। औद्योगीकरण से आर्थिक व्यवस्था बदलती है और इसका प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र में देखने को मिलता है। विकासशील देशों में और विशेषकर एशिया में आर्थिक कारकों का प्रभाव राजनीति पर पर्याप्त

रूप से देखने को मिलता है। औद्योगीकरण से ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक संरचना एवं नातेदारी व्यवस्था पर प्रभाव हुआ है।

औद्योगीकरण के प्रभाव

परिवार पर औद्योगीकरण का प्रभाव - जब औद्योगीकरण अधिक तीव्र नहीं था, सामान्यतः लोग मुख्य रूप से खेती-बाड़ी करते थे या दस्तकारी के धन्धों को परम्परा से चलाते थे। इस अवस्था में परिवार एक मुख्य आर्थिक इकाई था जिसका आपस में जुड़ाव था। औद्योगीकरण ने परिवार संस्था को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में प्रभावित किया है-

1. औद्योगीकरण के पहले परिवार जहाँ आर्थिक उत्पादन की इकाई था वह अब उपभोग की इकाई बन गया है। परिवार के सभी लोग खेती-बाड़ी करते थे और जो कुछ भी उत्पादन होता था, उसका उपभोग करते थे या उत्पादन के एक भाग को जो अतिरिक्त होता था, बाजार में बेच देते थे। कुछ इसी तरह हस्तकला की बिक्री भी बाजार में हो जाती थी और इसकी आय से परिवार का भरण-पोषण चलता था। अब परिवार घर से बाहर आ गया, कारखानों में काम करने लगा और इससे अर्जित धन का उपभोग घर में होने लगा।

2. अब परिवार के वयस्क जवान परिवार पर निर्भर नहीं रहे। उन्हें जो कारखानों में पगार मिलती है, उससे वे आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बन गए। केवल मुट्ठी भर लोग ही खेती-बाड़ी से जुड़े हैं। इसके परिणामस्वरूप परिवार के मुखिया का प्रभाव या उसकी जो परम्परागत शक्ति थी, कमजोर हो गई। बड़े शहरों में तो आदमियों के साथ स्त्रियाँ भी कारखानों और दफ्तरों में काम करने लगी है। उनमें भी आर्थिक स्वावलम्बन आ गया है। इस नई प्रक्रिया ने परिवार के सदस्यों के बीच के सम्बन्धों को बदल दिया है।

3. औद्योगीकरण ने जहाँ वयस्कों और स्त्रियों को कारखाने या उत्पादन क्षेत्रों को कार्यालयों में ला दिया है, वहाँ परिवार के बच्चे परिवार का दायित्व बन गए हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसा भी हुआ जहाँ बच्चे भी बाल-श्रमिकों की तरह छोटे-मोटे कारखानों में काम करने लगे हैं। सबको मिलाकर औद्योगीकरण ने घर और धन्धों के स्थान को अलग कर दिया है।

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप हाल ही के वर्षों में परिवार की संरचना में एक नया स्वरूप उभरकर सामने आया है। ऐसे नव संरचित परिवारों को महिला-मुखिया परिवार कहते हैं। औद्योगीकरण का विकास शहरी अंचल में अधिक हुआ है। अब गाँवों के लोग बड़ी तादाद में कारखाने में काम करने के लिए शहर की ओर स्थानागमन करते हैं। राँची, धनबाद, सूरत, मुम्बई, दिल्ली ऐसे शहर हैं जहाँ उद्योगों का एक जाल सा बिछा हुआ है। इन नगरों में आस-पास और दूर-दराज के गाँवों के लोग बहुत बड़ी संख्या में मजदूरी के लिए या छोटे-मोटे व्यवसाय के लिए आते हैं। गाँव में ऐसी अवस्था में इन मजदूरों की स्त्रियाँ परिवार के मुखिया की तरह काम करती हैं। परिवार की इन महिला-मुखियाओं के सामने दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में कई समस्याएँ आती हैं। खेत को जोतना, खाद्यान्नों को बाजार में जाकर बेचना, जमीन पर अधिकार बनाए रखना, कर्जा लेना या विवाह आदि के निर्णय करना, ऐसे कई कार्य हैं जो इन महिला मुखियाओं को सम्पन्न करने होते हैं। उधर शहर के कारखानों में काम करने वाले मजदूर के खान-पान और निवास की समस्या और इनसे आगे बढ़कर गाँव के परिवार की समस्याओं का तनाव बराबर बना रहता है। औद्योगीकरण की तीव्रता के साथ महिला-मुखिया परिवार एक सामान्य

बात हो जाएगी। हमारे देश में ऐसे परिवारों के अध्ययन का अभी सिलसिला नहीं चला है। इन परिवारों की समस्याओं की पहचान होना आज बहुत आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र

किनोनी ग्राम मेरठ जिले का गाँव है। जहां पर बजाज हिन्दुस्तान लिमिटेड (बी.एच.एल.) द्वारा शुगर मिल एवं अन्य सहयोगी फैक्ट्री खोली गयी औद्योगिक ईकाईयां लगने से पूर्व ग्रामीण लोगों की जीवन शैली पारिवारिक संरचना, शिक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आज की जीवन शैली से तुलनात्मक अध्ययन को पूरा करने हेतु शोध लेख का मुख्य उद्देश्य है किनोनी गांव मेरठ से 35 किलोमीटर पश्चिम की तरफ हिण्डन नदी के किनारे स्थित गांव है। जिसमें अलग-अलग जाति के तथा हिन्दू व मुस्लिम दोनों धर्म के लोग के परिवार अपना जीवन व्यतीत करते है। गुर्जर, नाई, तेली, धोबी, कुम्हार, ब्राहमण, कश्यप, दलित आदि अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अन्तरूनिर्भरता पायी जाती है, लेकिन औद्योगिक इकाई के लगने के पश्चात इस क्षेत्र की (जातिय संरचना सम्बधो में) में तीव्र परिवर्तन देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में शिक्षा का स्तर मध्यम है इस क्षेत्र में आसपास कोई डिग्री कॉलेज नहीं है। यहां की छात्र-छात्राएं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये मेरठ जाते हैं तथा वहां के डिग्री कॉलेज में अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करते है।

निष्कर्ष

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं

ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ते औद्योगीकरण के कारण सामाजिक मूल्यों में ह्रास हुआ है तथा नई पीढ़ी में तेजी से परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में तेजी से सकारात्मक बदलाव आया है तथा लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। आज औद्योगीकरण के कारण कृषि तकनीकी में तेजी से बदलावा सकारात्मक रूप से देखने को मिलता है, जिनके कार्यों में मानवश्रम को काफी कम किया है। औद्योगीकरण के कारण जातीय व्यवस्था में ऊँच-नीच की भावना में कमी आयी है तथा विभिन्न जातियों के बीच की दूरी घटी है। संयुक्त परिवार टूटकर एकांकी परिवारों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। शिक्षा व्यवस्था में तेजी से सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। औद्योगीकरण के कारण चारों ओर के वातावरण में प्रदूषण बढ़ा है, जिसका लोगों के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। औद्योगीकरण के कारण रोजगारी की समस्या कम हुई है लेकिन सिजनल बेरोजगारी कभी-कभी देखने को मिलती है। लोगों से सम्पर्क के दौरान पता चला है कि लोगों की आर्थिक स्थिति में तेजी से बदलाव के साथ-साथ जीवन-यापन की विधि में भी तेजी से परिवर्तन आया है। सन् 2008 के पहले लोगों का कार्य पशुचरण मुख्य होता था तथा प्रत्येक घर से एक व्यक्ति अपने पशुओं को खोलकर चराने के लिये ले जाता था, जिन्हें ग्वालिया कहा जाता था। गन्ना शुगर मिल लगने के बाद यह प्रथा तेजी से लुप्त होती गयी तथा आज गांव में इस कार्य को पिछड़ेपन का प्रतीक मानने के साथ-साथ हीन कार्य माना जाता है। इस प्रकार तेजी से बदलाव के साथ-साथ सामाजिक संरचना में भी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं।

जाति व्यवस्था में बदलाव

ग्रामीण परिवेश में जाति की संरचना में आजादी के पश्चात् तेजी से परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। औद्योगीकरण से जाति बंधन ढीले हुए हैं।

समाज में व्याप्त पवित्रता एवं अपवित्रता की संकल्पना भी कम हुई है।

मानसिक संकीर्णता कम हो रही है। आज समाज में अंतर्जातीय विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है।

औद्योगीकरण प्रत्येक देश के लिए उपयोगी है। इसी कारण भारत में भी इसका महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं है। भारत में निम्न कारणों से औद्योगीकरण की आवश्यकता है-

1. भारत आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देश नहीं है। देश के सन्तुलित आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण आवश्यक है।

2. भारत में कृषि की उन्नति तथा पिछड़ेपन को दूर करने के लिए यह आवश्यक है।

3. औद्योगीकरण का जनसंख्या पर भी प्रभाव पड़ता है। भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि को सन्तुलित करने में इसकी आवश्यकता है।

4. बेरोजगारी की समस्या से निजात पाने का एक उपाय औद्योगीकरण हो सकता है, इसलिए भारत में इसकी आवश्यकता है।

5. भारत में प्रतिव्यक्ति आय कम है, इसलिए इसकी वृद्धि हेतु यह आवश्यक है।

6. युद्ध सामग्री के वृहद् स्तर पर उत्पादन हेतु यह आवश्यक है क्योंकि भारत में इसकी कमी है।

7. औद्योगीकरण ही एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से देश का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *Baden Powell, B.H. (1894). A short account of the Land Revenue and its Administration in British India : With a sketch of the Land Tenures. Oxford : Clarendon Press.*
- *Bailey, F.G. (1957). Caste and the Economic Fortier. Manchester : Manchester University Press.*
- *Beattie, Johan. (1966) Ritual and Social Change. Man (New Series) 1 : 60-74.Berreman, G.D. 1967. Caste as Social Process. South Western Journal of Anthropology 23 : 351-370.*
- *Beteille, Andre. (1965). Caste, Class and Power : Changing Pattern of Stratification in a Tanjore Village. Bombay : Oxford University,*
- *Dube, S.C. (1955). Indian Village. London : Rutledge and Kegan Paul Ltd.*
- *Dube, S.C. (1967). Modernization and its Adaptive demands on Indian Society. In Paper in the Sociology of Education in India. Ed. M.S. Gore. New Delhi : National Council of Educational Research and Training.*
- *Dumont, Louis and D. Pocock. (1957). Village Studies. In Contributions to Indian Sociology Ed. Louis Dumont and Lo Dagaba.*
- *Hagen, E. Everett, (1964). One the Theory of Social Change London : Tavistock Publications.*
- *Lewis, Oscar. (1958) Village Life in Northern Indian Urban : University of Illinois Press.*
- *Martindale, Don. (1962). Social Life and Cultural Change. New Youk : D. Van Nostrand & Company.*
- *Rao, M.S.A. (1966) Urbanization in a Delhi Village. Economic and Political Weekly : 293-308.*
- *Singer, M. (1956) Introduction, The Indian Village : a Symposium. Journal of Asian Studies 16 : 3-5.*
- *Srinivas, M.N. (1956). Sanskritization and Westernization. Far Eastern Quarterly 15 : 481-497.*
- *Srinivas, M.N. (1962). Caste in Modern India a other essays. Bombay : Asia Publishing House.*
- *Srinivas, M.N. (1966). Social Change in Modern India. New Delhi : Allied Publishers.*
- *G.S. Ghurye, "Family and Kin in Indo-European Culture", Oxford University Press, London, 1955*
- *Karve, "Kinship Organization in India", Decem College, Poona, 1953*
- *K.M. Kapadia, "Marriage and Family in India", Oxford University Press, Bombay, 1958*
- *I.P. Desai, "Some Aspect of Family in Mahuva : A Sociological Study of Jointness in a Small Town", Asia Publishing House, Bombay, 1964*
- *A.D. Ross, "Hindu Family in Its Urban Setting", University Toronto Press, Toronto, 1961*